दिव्यम्

संस्कृत पाठमाला

8

1. वंदना

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) परब्रह्मं (ख) आदिदेव: (ग) (अ) यो देवो अग्नौ।

2. स्वयं कीजिए।

❑

2. किं तर्तुं न जानाति भवान्

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) (स) प्राध्यापक: (ख) (स) द्वाऽपि सत्यम्
(ग) (ब) आंग्लाभाषा (घ) (ब) विद्यालयम्

2. (क) भाग्यं (ख) त्रयो (ग) जलावर्तनं (घ) तर्तुं

3. (क) $\rightarrow$ (iii) (ख) $\rightarrow$ (iv) (ग) $\rightarrow$ (v) (घ) $\rightarrow$ (i) (ङ) $\rightarrow$ (ii)

4. (क) विद्यालय: (ख) प्रथमोऽवसर: (ग) चतुर्थांश (घ) स्यादेव

5.

	विभक्ति	**वचनं**
(क)	षष्ठी	एकवचन
(ख)	द्वितीया	एकवचन
(ग)	तृतीया	एकवचन
(घ)	सम्बोधन	एकवचन

6. (क) प्राध्यापक: नाविकं
(ख) नाविक: प्राध्यापकं
(ग) नाविक: प्राध्यापकं
(घ) प्राध्यापक: नाविकं

7. (क) प्राध्यापक:
(ख) नौकाया: अग्रेसारणं अरित्रामाध्यमेन भवति।
(ग) नाविक: ग्लानिम् अनुभवत्।
(घ) नौका: जलपूरेण पूरिता।
(ङ) प्राध्यापक: तर्तुं न जानाति स्म।

8. (क) जो मैं भौतिकशास्त्र या रसायनशास्त्र पढ़ता।
(ख) माता-पिता ने मुझे विद्यालय ही नहीं भेजा।
(ग) इसके बाद नदी में बाढ़ आ गई।
(घ) क्या आप तैरना जानते हो?

9. स्वयं कीजिए।

❑

3. श्रमेव जयते

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) (अ) धनिक: (ख) (अ) क्षेत्राणि (ग) (स) कृषक:
(घ) (ब) ऋणी

2. (क) भृत्यान् (ख) स्वक्षेत्रे निरीक्षणाय (ग) क्षेत्रेषु
(घ) क्षेत्राणि (ङ) रूप्यकाणि

3. (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (i) (ङ) → (ii)

4. (क) करोड़ीमलस्य समीपे अनेकानि क्षेत्राणि आसन्।
(ख) धनिकस्य करोड़ीमलस्य भृत्या: सेवका: च स्वेच्छानुसारं कार्यं कुर्वन्ति स्म।
(ग) करोड़ीमल: बहुप्रमादी आलस्ययुक्तासीत्।
(घ) रामपाल: परिश्रमी आसीत्।
(ङ) रामपाल: करोड़ीमलं अकथयत्—एतानि रुप्यकाणि मह्यं केनापि न दत्तानि। एतानि रुप्यकाणि तु अहम् उत्पादनधान्यै: प्राप्तवान् इति।

5. (क) अहम् भवदभ्य: अल्पमूल्यं न दास्यामि।
(ख) रामपालस्य परिवारस्य सदस्या: अपि तस्य सहयोगं कुर्वन्ति स्म।
(ग) करोड़ीमल: सविस्मयेन अपृच्छत्।
(घ) करोड़ीमलस्य भृत्य—सेवका: च इतस्तत: भ्रमणन्ति स्म।
(ङ) अल्पेनैव काले रामपाल: धनिक: अभवत्।

6. (क) एक गाँव में एक धनवान रहता था।
(ख) थोड़े ही समय में करोड़ीमल गरीब हो गया।
(ग) एक बार उसने खेत बेचने का निश्चय कर लिया।
(घ) मजदूर खेतों में कूड़ा आदि बाहर निकालते थे।
(ङ) भूमि खरीदने के लिए उसके मूल्य को कैसे दोगे।

❒

4. अभ्यासस्य फलम्

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) विद्याध्ययनं (ख) उपहासं (ग) जलेन्
(घ) घटेन (ङ) संस्कृतस्य

2.	**एकवचन**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
(क)	मालायै	मालाभ्याम्	मालाभ्य:
(ख)	लताम्	लते	लता:

(ग) रमया	रमाभ्याम्	रमाभि:
(घ) महिलाया:	महिलयो:	महिलानाम्
(ङ) कन्याया:	कन्याभ्याम्	कन्याभ्य:

3.

शब्द:	**बहुवचनम्**	**शब्द**	**एकवचनम्**
पूरयति स्म —	पूरयन्ति स्म	पूरयन्ति स्म —	पूरयति स्म
पठति स्म —	पठन्ति स्म	पठन्ति स्म —	पठति स्म
गच्छति स्म —	गच्छन्ति स्म	गच्छन्ति स्म —	गच्छति स्म
धावति स्म —	धावन्ति स्म	धावन्ति स्म —	धावति स्म

4. (क) → (iv) (ख) → (iii) (ग) → (v) (घ) → (vi) (ङ) → (i) (च) → (ii)

5. (क) वरदराजस्य (ख) एकं कूपम् (ग) जलेन
(घ) आश्रमम् (ङ) संस्कृत-व्याकरणस्य

6. (क) आश्रमे मन्दबुद्धि: छात्र: वरदराज: आसीत्।

(ख) आत्मसम्मानेन वञ्चित: वरदराज: अचिन्तयत—''नूनम् अहं मूर्ख: अस्मि। मम् भाग्ये विद्या नास्ति।''

(ग) वरदराज: मार्गे एकं कूपम् अपश्यत् अचिन्तयत च—''यदि मृतिका-घटेन शिलायां गर्त: भवितुमर्हति तर्हि पुन: पुन: अभ्यासेन मम् बुद्धि: अपि कथं तीव्रा न भविष्यति।''

(घ) वरदराज: संस्कृत-व्याकरणस्य क्षेत्रे प्रसिद्ध: अभवत्। ❑

5. जन्मभूमि–प्रेम

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) आम्रवृक्ष: (ख) (स) सरोवर: (ग) (स) पक्षिण:

2. (क) सरोवर: (ख) पक्षिण: (ग) आम्रवृक्ष:
(घ) व्याध: (ङ) लब्धवान्

3.

	विभक्ति	**वचनम्**
(क)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ख)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ग)	द्वितीया	बहुवचनम्
(घ)	पंचमी	एकवचनम्
(ङ)	तृतीया	एकवचनम्
(च)	षष्ठी	एकवचनम्
(छ)	पंचमी	एकवचनम्
(ज)	चतुर्थी	एकवचनम्

4. (क) सरोवर: (ख) आम्रवृक्ष: (ग) व्याध:
(घ) विषदग्धानां बाणानां (ङ) भगवान् विष्णु: (च) दैवदुर्विपाकात्
(छ) अमृतवृष्टि: (ज) तारूण्यं

5. (क) वृक्षस्व शाखासु विविधा: विहंगा: वसन्ति स्म।
(ख) सरोवरस्य समीपे जलं पातुम् आगतम् एकं मृगयूथं दृष्ट्वा तेन तस्योपरि तीक्ष्णा: बाणा: क्षिप्ता:।
(ग) आम्रवृक्षं तथाविधं दृष्ट्वा पक्षिण: तस्याश्रय परित्यज्य अन्यान् वृक्षान् उपागच्छन्।
(घ) शुकस्य आम्रवृक्षं प्रति एतादृशी भक्तिभावनाम् अवलोक्य भगवान् विष्णु विस्मित: जात्।
(ङ) अमृतस्य प्रभावेण मृत: आम्रवृक्ष: शुकेन सह पुन: तारूण्यं लब्धवान्।

6. घटनाया: आधारेण वाक्यानां उचितं क्रम
(घ) → (ख) → (ज) → (च) → (ग) → (क) → (छ) → (ङ)

7. <u>एकदा</u> कश्चित् व्याध: तस्मिन् मार्गे आगत:।
वृक्षस्य शाखा: पर्णहीना: <u>निष्फला:</u> च अभवन्।
शुकस्य वचनानि <u>श्रुत्वा</u> भगवान् विष्णु: प्रसन्न: अभवत्
मृत: आम्रवृक्ष: शुकेन <u>सह:</u> पुन: तारूण्यं लब्धवान्।
न संकटापन्नम् एनं त्यक्तवा स्वप्नेऽपि अन्यं वृक्षं <u>गन्तुम्</u> इच्छामि।
भगवान् विष्णु: <u>प्रसन्न:</u> भूत्वा अवदत्। ❑

6. गीतामृतम्

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) वासांसि, नरोऽपराणि (ख) शस्त्राणि, दहति
(ग) यदा-यदा, ग्लानिर्भवति (घ) संभवामि

2. (क) क्लेदयन्त्यापो (ख) जीर्णान्यन्यानि
(ग) तदात्यानम् (घ) कर्मण्येव
(ङ) नरोऽपराणि (च) सृजाम्यहम्

3. (क) आत्मा अमर: अस्ति।
(ख) जनस्य अधिकार: कर्मण्येव भवति।
(ग) धर्मस्य अभ्युत्थाने भगवान: आत्मानं सृजति।
(घ) शस्त्राणि आत्मां न छिन्दति।

4. (क) ईश्वर: सर्वशक्तिमान् अस्ति। (ख) कर्म एव मुख्यम्।
(ग) आत्मा अजर: अमर: च अस्ति।
(घ) न कश्चित् आत्मानं मारयितुं शक्नोति। ❑

7. दीपमालिका

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) पर्वाणाम् (ख) (ब) रावणम् (ग) (स) द्वाऽपि सत्यम्
   (घ) (ब) लक्ष्मीपूजनम्
2. (क) घृतदीपान् (ख) गगनं (ग) क्रीणन्ति।
   (घ) लक्ष्मीपूजनं (ङ) विषाक्तेन धूम्रेण
3.

	लकारः	वचनं	पुरुषः
(क)	लट्	बहुवचनं	प्रथम
(ख)	लट्	एकवचनं	प्रथम
(ग)	लट्	एकवचनं	प्रथम
(घ)	लट्	एकवचनं	प्रथम

4. (क) दीपमालिका: विजयदशमीत: विंशतिदिनानां पश्चात् कार्तिकमासस्य अमावस्यायाम् आगच्छति।
   (ख) यदा राम: प्रत्यागत: अयोध्यावासि: प्रमुदिता: अभवन्।
   (ग) जना: विद्युतदीपै:, तैलदीपै: द्रावर्तिकाभि: च गृहाणि आलोकयन्ति।
   (घ) दीपमाला अन्धकारं नाशयति।
   (ङ) विस्फोटकानि वातावरणं विषाक्तेन धूम्रेण प्रदूषयन्ति येन केचित् जना: विशेषत: बाला: वृद्धा: च रुग्णा: भवन्ति।
5. (क) एवम् + अनुश्रूयते (ख) तद् + आगमन
   (ग) अद्य + अवधि (घ) परम् + परेयम्
   (ङ) नभ: + मण्डले (च) स्वयम् + अपि
   (छ) अति + आकर्षकम् (ज) सम् + उत्क्षिपन्ति

❒

8. ऋतुराजः वसन्तः

❒ अभ्यासकंठी

1.

	मूलशब्दं	विभक्तिः	वचनम्
(क)	ऋतु	सप्तमी	बहुवचनं
(ख)	ऋतु	सप्तमी	एकवचनं
(ग)	काल	सप्तमी	एकवचनं
(घ)	तिथि	सप्तमी	एकवचनं
(ङ)	प्रभात	सप्तमी	एकवचनं

2.	धातु	लकारः	पुरुषः	पदः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा—	कथ्	लट्	प्रथम	आत्मने	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
(क)	कृ	लट्	प्रथम	परस्मै	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
(ख)	कृ	लृट्	प्रथम	परस्मै	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
(ग)	धृ	लट्	प्रथम	परस्मै	धारयति	धारयत:	धारयन्ति
(घ)	खाद्	लट्	प्रथम	परस्मै	खादति	खादत:	खादन्ति
(ङ)	जन्	लट्	प्रथम	आत्मने	जायते	जायेते	जायन्ते

3. (क) **अर्थ**—ऋतुओं का राजा
   वाक्य-प्रयोग—वसन्त: ऋतुराज: कथ्यते।
   (ख) **अर्थ**—समारोह
   वाक्य-प्रयोग—एतत् समारोह: संपूर्णे देशे मान्यते।
   (ग) **अर्थ**—नया
   वाक्य-प्रयोग—मानवा: नवीनं प्रसादमयं उल्लासमयं च जीवनं यापयन्ति।
   (घ) **अर्थ**—इलाज
   वाक्य-प्रयोग—वसन्ते भ्रमणं पथ्यम् इति प्रसिद्धम्।
   (ङ) **अर्थ**—शहद
   वाक्य-प्रयोग—भ्रमरा: मधुपानं कुर्वन्ति।

4. (क) पिका: कुत्र कूजन्ति?
   (ख) क: स्वधर्माय निजप्राणान् अयच्छ्त?
   (ग) सुगन्धस्य साम्राज्यं कुत्र भवति?
   (घ) भ्रमरा: कस्य उपरि गुञ्जन्ति?
   (ङ) वृक्षेभ्य: पीतानि शुष्कानि कानि पतन्ति?

5. (क) वसन्त: (ख) विद्यार्थिन: (ग) होलिकादहनं
   (घ) विविधेषु उद्यानेषु (ङ) यज्ञोपवीतस्य (च) हकीकतराय:

6. (क) माघमासस्य शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ वसन्त-पञ्चमी पर्व भवति।
   (ख) मेघदूते महाकवि: कालिदासेन उक्तम्, 'सर्व चारुतरं वसन्ते'।
   (ग) जनानां दर्शनाय 'अमृतउद्यानं' वसन्ते सुगम: भवति।
   (घ) कुसुमाकरस्य आगमने सर्वत्र हरीतिमा भवति।

7. (क) सर्वे जना: प्रेम्णा मिलित्वा परस्परं उत्सवं।
   (ख) वसन्ते मानवानां शरीरेषु नवीनं रक्तं सञ्चरति।
   (ग) फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां होलिकादहनं भवति।
   (घ) अस्मिन् ऋतौ सर्वत्र सुगन्धस्य साम्राज्यं भवति।
   (ङ) स्वास्थ्यदृष्ट्या अयं ऋतु: सर्वोत्तम: कथयते।

8. (क) माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को यह पर्व होता है। लोग सरस्वती पूजन करते हैं। बालक विद्यारम्भ करते हैं। कहीं-कहीं यज्ञोपवीत समारोह होता है। इस दिन विद्यार्थी प्रातः सरस्वती का पूजन करते हैं। लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं। पीले रंग के पकाये गये चावल व मिठाई खाते हैं। पतंग प्रतियोगिता भी होती है। इस दिन हकीकतराय नाम के बालक ने स्वधर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। अतः इनका बलिदान दिवस पंजाब में मनाया जाता है।

(ख) न केवल मनुष्य अपितु पशु, पक्षी, कीड़े आदि भी नये प्रसादमय और उल्लासमय जीवन को व्यतीत करते हैं। हेमन्त शिशिर की जड़ता नष्ट हो जाती है। फूलों (वसन्त) के आने से सर्वत्र हरियाली हो जाती है। आकाश साफ हो जाता है। सुगन्ध फैलने लगती है। नदी और तालाबों में सर्वत्र स्वच्छ जल रहता है।

(ग) मनुष्य अनेक बगीचों में प्रकृति की सुन्दरता देखने जाते हैं। उसी समय राष्ट्रपति भवन में ''अमृत उद्यान'' लोगों के दर्शन के लिए खोला जाता है। कोयल वनों में कूकती हैं। सब जगह सुगन्ध का वातावरण होता है। शीतल एवं सुगन्धित वायु चलती है। वृक्षों से पीले और सूखे पत्ते गिरते हैं और नये पत्ते आते हैं। भौंरे फूलों के ऊपर गूँजते और मधुपान करते हैं।

❑

9. मतिः एव बलात् गरीयसी

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) तडागः (ख) (स) विजय (ग) (ब) चतुर्दन्तः
(घ) (स) शशांक

2. (क) राजा + आसीत् (ख) वर्षाकाले: + अपि
(ग) इतः + ततः (घ) कदा + अपि
(ङ) पादः + आघ्रातैः

3. (क) चन्द्रः, निशाकरः, विधुः (ख) दन्तिः, कुञ्जरः, करिः
(ग) वारि, सलिलम्, उदकम् (घ) वर्षाः, वर्षणः, वारिदी
(ङ) खरहा, शशा, शशकः (च) जलाशय, सरः, तडागः

4.

	धातु	लकारः	पुरुषः	वचनं
(क)	कृ	लोट्	प्रथम	एकवचनं
(ख)	अन्वय	लृट्	उत्तम	एकवचनं
(ग)	तृप्	लङ्	प्रथम	बहुवचनं
(घ)	भ्रम	लङ्	प्रथम	बहुवचनं
(ङ)	खिद्	लङ्	प्रथम	एकवचनं
(च)	धृ	लट्	उत्तम	एकवचनं

5. (क) शशयूथ:　　(ख) वने　　(ग) शिलीमुखो
(घ) चतुर्दन्त:　　(ङ) सरोवरजले चन्द्रप्रतिबिम्बं
(च) शशयूथ:

6. (क) इतस्तत: विचरन्त: गजा: स्वचरणतलै: अनेकान् शशकान् चूर्णितवन्त:।
(ख) कम्पसमाकुल: स: शुण्डम् उत्थाय चन्द्रदेवं प्रणम्य क्षमाम् अयाचत्—''वयं भूय: एवं न करिष्याम:'' इति अवदत् च।
(ग) एकदा वर्षाकालेऽपि जलवृष्टि: न अभवत्। वन्यजन्तव: दु:खिता: अभवन्।
(घ) प्रसन्ना: गजा: जलं प्रविश्य जलक्रीडां अकुर्वन् जलं पीत्वा अतृप्यन् च।
(ङ) दु:खी परिवारं अवलोक्य विजय: अवदत्—''चिन्तां मा कुरुत। अहं स्वबुद्धिकौशलेन गजान् दूरं करिष्यामि।''
(च) चन्द्रदेवस्य सन्देश: आसीत् यत् यदि यूयम् आत्मकल्याणं वाञ्छथ तर्हि अस्मात् स्थानात् दूरं गच्छन्तु। पुन: अत्र कदापि न आगन्तव्यम्। पश्य तडागे चन्द्रदेवस्य मुखस्य दर्शनं कुरु। तं प्रणम्य शीघ्रं दूरतरं व्रजन्तु।
(छ) व्याकुल: गजयूथपति: अकथयत्—''भगवान् चन्द्र: मम आदरणीय:। अज्ञानेन वयं एवं अकुर्म। न पुन: भविष्यति एष: अपराध:। अहं क्षमां प्रार्थये। चन्द्रदेव: मम अपराधं क्षाम्यतु। अथ क: आदेश: अस्मभ्यम्?''

7. (क) वने किं आसीत्?
(ख) जलाभावात् क: दु:खिता: आसन्?
(ग) गजराज: कस्मिन् चन्द्र-प्रतिबिम्बं अपश्यत्?
(घ) मति: एव कस्मात् गरीयसी?
(ङ) तडागं दृष्ट्वा क: प्रसन्न: अभवत्?

8. (ग) → (ङ) → (घ) → (क) → (च) → (ख)

9. (क) चन्द्रसरो नामक: तडागस्य तटे एक शशयूथ: वसति स्म:।
(ख) गजयूथपति: यूथेन सह दूरं वनम् अगच्छत्।
(ग) कम्पसमाकुल: गज: शुण्डम् उत्थाय चन्द्रदेवं प्रणम्य।
(घ) अस्य अपराधस्य फलं यूयं अवश्यमेव प्राप्स्यथ।
(ङ) गजां पादाघातै: अनेके शशका: मृता: अभवन्।

10. (क) यूथपति ने वन में जाकर जल से भरा हुआ तालाब देखा। उसके तट पर खरगोश रहते थे। गज समूह उस तालाब को देखकर प्रसन्न हो गया। प्रसन्न हुए हाथी जल के अन्दर जल-क्रीड़ा करने लगे और जल पीकर तृप्त हुए। बाहर आकर वे तट पर इधर-उधर घूमने लगे। इधर-उधर घूमते हुए हाथियों के पैरों के नीचे अनेक खरगोश कुचल गये। उनके पैरों के आघात से अनेक खरगोश मर गये और वे दु:खी हुए। दु:खी परिवार को देखकर शिलीमुख दु:खी हुआ। विजय नामक वृद्ध मन्त्री ने कहा—''चिन्ता मत करो। मैं अपनी बुद्धिबल से इन हाथियों को दूर कर दूँगा।''

(ख) अगले दिन फिर वह हाथी स्नान के लिए सूर्यास्त के समय आया। विजय ने पर्वत पर चढ़कर कहा—''अरे दुष्टों! मैं चन्द्रदेव का दूत हूँ। चन्द्रदेव ने सन्देश दिया है कि यह तालाब मेरा निवास स्थान है। वहाँ खरगोश रहते हैं। मैं खरगोशों को पुत्र के समान पालता हूँ और गोद में बैठाता हूँ। इसलिए मेरा दूसरा नाम शशांक है। इस समय तुम निरपराध खरगोशों को मार रहे हो। मेरा तालाब भी नष्ट कर दिया। इस अपराध का फल तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा। मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।''

(ग) विजय धीरे-धीरे हँसते हुए बोला—''चन्द्रदेव का सन्देश है कि तुम आत्मकल्याण चाहते हो तो इस स्थान से दूर चले जाओ। फिर कभी मत आना। देखो! चन्द्रदेव के दर्शन तालाब में करो। उन्हें प्रणाम कर शीघ्र ही कहीं दूर चले जाओ।''

गजयूथपति चतुर्दन्त सरोवर के पास आया। वह तालाब में चन्द्रदेव का प्रतिबिम्ब देखकर डर गया। काँपते हुए उसने सूँड उठाकर चन्द्रदेव को प्रणाम कर क्षमा माँगी और कहा—''हम आगे से ऐसा न करेंगे।''

❑

10. ईश्वरः यत् करोति, शोभनम् एव करोति

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) स्नेहेन (ख) सचिवाः (ग) करोति, शोभनम्
(घ) अङ्गुली (ङ) दस्युभिः गृहीतौ, समीपं

2. (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (ii) (ङ) → (i)

3. (क) मंत्री (ख) ईश्वर (ग) दस्युराजः
(घ) नृपः मन्त्री च (ङ) नृपः

4. (क) नृपः बुद्धिदेवं अपृच्छत्। (ख) राजा आखेटाय वनं अगच्छत्।
(ग) दस्युराजः सेवकान् अकथयत्। (घ) बुद्धिदेव उत्तरं अदत्त।
(ङ) दस्युराजः बन्दिनम् आनयत्। (च) दस्युः तौ मुक्तौ अकरोत।

5. (क) सः (ख) तेन (ग) ते
(घ) सः (ङ) तौ

6. (क) एकः नृपः स्नेहेन प्रजां पालयति स्म। 1
(ख) बुद्धिदेवस्य पुत्रः मृतः नृपस्य च अङ्गुली छिन्ना जाता। 6
(ग) तत्र तौ दस्युभिः बलिकार्याय गृहीतौ। 5
(घ) सः सर्वदा कथयति स्म—''ईश्वरः यत् करोति तत् शोभनम् एव करोति।'' 3
(ङ) दस्युराजः अकथयत्—''पुत्रहीनतया सचिवः बलिकार्याय अनुपयुक्तः।'' 7
(च) तस्य बुद्धिदेवः नाम्नः सचिवः आसीत्। 2
(छ) एकदा नृपः सचिवश्च आखेटाय वनं गतवन्तौ। 4

(ज) राजा च अङ्गहीनतया बलिकार्याय अनुपयुक्त:। 8

(झ) राजा अकथयत्—"त्वं सत्यं वदसि, ईश्वर: यत् करोति तत् शोभनम् एव करोति।" 10

(ञ) उभौ तत: पलायितौ। 9

7. (क) राज्ञ: क: आसन।	(ख) अन्ये मन्त्रिण: किम् कृतवन्त:?
(ग) केन शोभनं न कृतम्?	(घ) क: आखेटाय वनं गतवान्?
(ङ) अधुना किम् पूर्णं भविष्यति।

8. (क) बुद्धिदेव:।
(ख) क्रुद्ध: दस्युराज: सेवकान् अवदत्, "रे मूर्खा:! मम देवी अङ्गहीनस्य बलिं न वाञ्छति। अत: एनम् अपि त्यजत।"
(ग) बुद्धिदेव: सर्वदा कथयति स्म—"ईश्वर: यत् करोति तत् शोभनम्।"
(घ) दस्युराज: बुद्धिदेवस्य बलिं अत: न अयच्छत् यतोहि स: पुत्रहीन: आसीत्।
(ङ) नृपस्य अङ्गलि छिन्ना आसीत् अत: स: बलिकार्याय अनुपयुक्त: आसीत्।

9. (क) नृप: स्वप्रजां बहु प्रेम्णा पश्यति स्म।
(ख) एकदा तस्य पुत्र: मृत: आसीत्।
(ग) एकदा नृपस्य अङ्गुली छिन्ना अभवत्।
(घ) नृप: मन्त्रिणा सह आखेटाय अगच्छत्।

❑

11. सङ्घे शक्तिर्भवति

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) महिलारोप्यं	(ख) कपोता:	(ग) तत्राऽगच्छत्
(घ) तण्डुलकणान्	(ङ) नीचै: आगन्तुम्	(च) बद्धा:
(छ) मूषक:	(ज) तत्राऽवतरत्

2.
	विग्रह	समास
(क)	परिवार सहितम्	अव्ययीभाव
(ख)	बन्धनाद मुक्त:	पंचमी तत्पुरुष
(ग)	तण्डुलस्य कणान्	षष्ठी तत्पुरुष
(घ)	वटस्य वृक्ष:	षष्ठी तत्पुरुष

3. (क) क्त	(ख) तुमुन्	(ग) क्त
(घ) क्त	(ङ) क्त	(च) क्त

4. (क) भोजन् + अर्थम्	(ख) तत्र + आगच्छत
(ग) जालस्य + उपरि	(घ) भूत्वा + अतिष्ठत्
(ङ) न + अन्वसरन्

5. (क) कपोता: वटवृक्षे वसन्ति स्म।
(ख) कपोतानां स्वामी चित्रग्रीव: आसीत्।
(ग) यदा कपोता: तण्डुलकणान् भक्षणार्थं नीचै: आगता: तदा ते जाले निबद्धा:।
(घ) यदा चित्रग्रीवस्य मित्रेण मूषकेण जालम् अकृन्तत् तदा कपोता: मुक्ता: अभवन्।
(ङ) आम्, सङ्घे शक्ति: भवति।

6. (क) वटवृक्षे अनेके कपोता: वसन्ति स्म।
(ख) तेषु परस्परं बहु स्नेह: आसीत्।
(ग) एकदा ते भोजनाय आकाशे उत्पतन्।
(घ) तस्मिन्नेव काले एक: व्याध: तत्र आगच्छत्।
(ङ) स: भूमौ स्व जालम् प्रासारयत्।
(च) चित्रग्रीव: व्याधं दृष्ट्वा कपोतान् अकथयत्।
(छ) मूषक: कपोतानां जालम् अकृन्तत्।

7. (क) दक्षिण के जनपद में महिलारोप्य नाम का नगर था।
(ख) उस नगर में बरगद का पेड़ था।
(ग) उसी समय एक शिकारी वहाँ आया।
(घ) वे उन्हें खाने के लिए नीचे आना चाहते थे।
(ङ) उनके स्वामी चित्रग्रीव ने उन्हें वैसा करने से रोका।
(च) इस प्रकार वे बन्धनमुक्त हुए।

❑

12. अंध: गृध्रराज:

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) वटवृक्ष: (ख) (ब) मार्जारस्य

2. (क) खगा: (ख) जरद्गवानम् गृध्र: (ग) मार्जार:
(घ) पक्षिशावकम् (ङ) जरद्गवेन, शावकां खादिता:

3. (क) वृक्ष + वासिन: (ख) चंद्र + आयण
(ग) विद्या + अवयो (घ) सर्व + दा
(ङ) श्रोतुम् + इहागत:

4.

	विभक्ति:	वचनम्
(क)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ख)	प्रथमा	बहुवचनम्
(ग)	तृतीया	बहुवचनम्
(घ)	षष्ठी	एकवचनम्
(ङ)	द्वितीया	बहुवचनम्

5. गृध्रराज: जटायु आसीत्।
वृक्षोपरि एक: वृद्ध: जरद्गवानम् गृध्र: वसति स्म।
मार्जार: प्रतिदिनम् एकम् पक्षिशावकम् क्रमेण खादति।
मया धर्मशास्त्रं श्रुत्वा वीतरागेणेदं दुष्करं व्रतं चांद्रायणमधयवसितम्?
कर्णो भवन्तमहमेष नमस्करोमि।
वृक्षस्य निडां पुरुषम् प्रहलादयति।

6. (क) जरद्गवान: भागीरथीतीरे गृध्रकूट: नाम्नि पर्वते महान् वटवृक्ष: उपरि निवसति स्म।
(ख) खगा: वटवृक्षोपरि निवसन्ति स्म।
(ग) नख: नयनयो: हीन: गृध्र: आसीत्।
(घ) मार्जार: पक्षिशावकान् भक्षयितुं वृक्षस्य समीपे आगत:।
(ङ) मार्जार: प्रतिदिनम् एकम् पक्षिशावकम् क्रमेण खादति स्म।
(च) अंते सर्वै: पक्षिभि: गृध्रो व्यापादित:।

7. (क) गङ्गाया: तीरे एक: वृक्ष: आसीत्।
(ख) वृक्षोपरि अनेकै खगा: निवसन्ति स्म।
(ग) वयं द्वौ-त्रिदिनानि यावत् ग्रामं गमिष्याम:।
(घ) दिवा भ्रमणार्थं पक्षिण: बहि: आगता:।
(ङ) अयं वृद्ध: गृध्र: शावकान् स्नेह करोति।

8. (क) गिद्ध नाखून और आँखों से हीन था।
(ख) उसको खाकर वह गिद्ध अपना जीवन चला रहा था।
(ग) उसको वहाँ आता देखकर पक्षियों के बच्चे शोर मचाने लगे।
(घ) अब उनकी उपस्थिति से भागने का समय आ गया।
(ङ) विद्या आयु में आप सब बुजुर्ग लोगों से धर्म ज्ञान सुनने आया हूँ।

❑

13. वीरोऽभिमन्युः

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) भीष्म: (ख) (ब) द्रोणाचार्यं (ग) (ब) अष्टादशदिनानि
(घ) (स) अभिमन्यु:

2. (क) सेनापति: (ख) व्याकुल: (ग) पितामह: भीष्म:
(घ) सेनापति: (ङ) द्रोणाचार्य:

3.

शब्द:	विभक्ति:	वचनम्
(क) महाभारतस्य	षष्ठी	एकवचनम्
(ख) एकादशे	चतुर्थी	एकवचनम्

(ग) प्राप्ते | सप्तमी | एकवचनम्
(घ) युद्धाय | चतुर्थी | एकवचनम्
(ङ) पाण्डवपक्षे | सप्तमी | एकवचनम्
(च) अतीव पराक्रमेण | तृतीया | एकवचनम्

4. (क) पितामहः भीष्मः सेनापति अभवत्।
(ख) अभिमन्यु अर्जुनस्य पुत्रः आसीत्।
(ग) कर्णः दुर्योधनस्य मित्रम् आसीत्।
(घ) अर्जुनं विहाय पाण्डवपक्षे कोऽपि अन्य चक्रव्यूहस्य भेदं न अजानात्।

5. विजयश्री नूनं तव एवं भविष्यति।
अभिमन्युः युद्ध क्षेत्रं प्रति प्रस्थानम् अकरोत्।
अभिमन्युः वीरगतिम् लब्ध्वा अमरः अभवत्।
यदि युद्धे अर्जुनः कदाचित् सन्निहितः न भवेत।
महाराजः युधिष्ठिरः अतीव व्याकुलोऽभवत्।

6. (क) एकादशे दिवसे द्रोणाचार्यः सेनापतिः अभवत्।
(ख) महाभारतस्य युद्धम् अष्टादश दिनानि प्राचलत्।
(ग) सर्वप्रथमः कौरवस्य सेनापतिः पितामहः भीष्मः अभवत्।
(घ) पञ्चदशे दिवसे द्रोणाचार्यः वीरगति प्राप्नोत्।
(ङ) अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रः आसीत्।

7. (क) हम सब जानते हैं।
(ख) महाराज युधिष्ठिर बहुत व्याकुल हो गये।
(ग) सबसे पहले पितामह भीष्म सेनापति हुए।
(घ) ग्यारहवें दिन द्रोणाचार्य सेनापति बने।
(ङ) वह चक्रव्यूह को तोड़ने की विधि जानता था।

❑

14. एकः शिशुः द्वे मातरौ

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) बुद्धिमान् (ख) तयोर्विवादस्य (ग) शिशु
(घ) तमारक्षकम्, द्वयखण्डं (ङ) जननी

2. (क) सन्तानहीन (ख) मिथ्या वदति (ग) राजसभाः
(घ) प्रतिदिनं

3.

	लिङ्ग	विभक्तिः	वचनम्
(क)	स्त्रीलिंग	सप्तमी	एकवचनम्
(ख)	पुल्लिग	तृतीया	एकवचनम्

(ग) नपुंसकलिंग	प्रथमा	द्विवचनम्
(घ) पुल्लिग	पंचमी	एकवचनम्
(ङ) स्त्रीलिंग	चतुर्थी	एकवचनम्

4. (क) सैव (ख) तदैव
(ग) पुत्रोऽस्ति (घ) एतदवलोक्य

5. (क) **अर्थ**—राजा
वाक्य-प्रयोग—एक: नृप: आसीत्।
(ख) **अर्थ**—धर्मात्मा
वाक्य-प्रयोग—नृप: धर्मनिष्ठ: आसीत्।
(ग) **अर्थ**—बालक
वाक्य-प्रयोग—तयो पार्श्वे एक: बाल: आसीत्।
(घ) **अर्थ**—विवाद
वाक्य-प्रयोग—एष: विवाद: तु अतिविचित्र: अस्ति।
(ङ) **अर्थ**—तलवार
वाक्य-प्रयोग—तस्य हस्ते अतितीक्ष्ण: खङ्ग: आसीत्।

6. (क) नृप: अतीव बुद्धिमान्, धर्मनिष्ठ: न्यायप्रिय: चासीत्।
(ख) एकस्मिन् दिवसे तस्य राजसभायां द्वे महिले आगच्छताम्।
(ग) तयो: पार्श्वे एक: बाल: आसीत्।
(घ) शिशो: जननी रेवा आसीत्।
(ङ) कर्णिका मिथ्यावादिनी आसीत्।

7. (क) नृप: बुद्धिमान्, धर्मनिष्ठ: न्यायप्रिय: चासीत्।
(ख) एकस्मिन् दिवसे राजसभायां द्वे महिले आगच्छताम्।
(ग) नृपेण तयोर्विवादस्य कारणं पृष्टम्।
(घ) जननी बालकानां जीवनं ददाति।
(ङ) नृपस्य न्यायं सर्वे जना: प्रशंसितवन्त:।

8. (क) वे दोनों आपस में लड़ रही थीं।
(ख) यह रेवा सन्तानहीन है।
(ग) यह विवाद अतिविचित्र है।
(घ) यह रेवा इस बालक की माता है।
(ङ) बालक का एक खण्ड रेवा को और दूसरा कर्णिका को दे दो।

❑

15. ग्राम्य जीवनम्

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) भोजनान्ते, गोदुग्धं (ख) बलवन्त, पुष्पकलमात्रायां
(ग) ग्रामेषु (घ) ग्रीष्म-वर्षा-शीतादि
(ङ) गोचारण

2. (क) क: सर्वदा कठिनं परिश्रमं कुर्वन्ति।
(ख) क: घृतं दधि च खादन्ति।
(ग) कस्य जीवनं सरलं भवति।
(घ) क: स्व-स्व गृहेषु गाम् अजां महिषीं च पालयन्ति।

3. (क) ग्रामेषु जना: पर्वाणि मिलित्वा सोत्साहेन सौहार्देन च सम्पादयन्ति।
(ख) यदि देशस्य सर्वेऽपि ग्रामा: आधुनिक-साधन-सम्पन्ना: स्यु तर्हि ग्राम्यजीवनं सुखकरं आदर्शभूतं च स्यात्।
(ग) ग्रामस्य वातावरणं प्रदूषणरहितं भवति।
(घ) ग्रामीणजना: स्वशरीरं पुष्टं बलवन्तं च विधातु पुष्पकलमात्रायां दुग्धं पिबन्ति, घृतं दधि च खादन्ति।
(ङ) ग्रामीणजना: कुल्याजलेन नलकूपजलेन च क्षेत्राणि सिञ्चन्ति।

4. (क) गतसप्ताहे अस्माकं विद्यालये अवकाश: आसीत्।
(ख) ग्रामेषु मम पितामह:, पितामही, पितृव्य: अन्येऽपि पूज्या: जना: अद्यापि निवसन्ति।
(ग) अहं श्रुतवान् यत् ग्रामवासिन: शरीरेण पुष्टा: निरोगिणश्च भवन्ति।
(घ) भोजने वक्रस्य अपि सेवनं श्रेयस्करं भवति।
(ङ) भारतं नैसर्गिकरूपेण ग्रामेष्वेव दृश्यते। ❏

16. डॉ० अब्दुल कलाम:

❒ **अभ्यासकंठी**

1. (क) (अ) वैज्ञानिक: (ख) (ब) तमिलनाडुप्रदेशस्य
(ग) (ब) अतिसामान्या (घ) (ब) पद्मभूषणम् (ङ) (अ) शाकाहारी

2. (क) वैज्ञानिक: (ख) प्रतिभासम्पन्न: (ग) अध्ययनं
(घ) धर्मनिरपेक्ष: (ङ) बालकेषु

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (v)
(घ) (i) (ङ) (ii)

4. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗)
(घ) (✓) (ङ) (✓)

5. (क) स: अध्ययनम् प्रति गम्भीर: आसीत्।
(ख) सर्वदा सत्यं वदति।
(ग) विद्यालयं अभित: वृक्षा: सन्ति।
(घ) यदा भानुर्उदयते तदा आकाश: रक्तो जायते।

6. (क) कलामस्य परिवारस्य आर्थिकावस्था अतिसामान्या आसीत्।
(ख) अब्दुल कलाम: 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठनस्य' सदस्य: अभवत्।
(ग) कलाम: 1981 तमे वर्षे पद्मभूषणम् सम्मानं प्राप्तवान्।
(घ) कुरान-भगवद्गीता इति पुस्तके प्रति अस्य महती रुचि: अवर्तत:।

❑

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (स) प्राध्यापक: (ख) (स) द्वाऽपि सत्यम् (ग) (अ) धनिक:
(घ) (अ) क्षेत्राणि (ङ) (स) कृषक:

2. (क) विद्याध्ययनं (ख) उपहासं (ग) पक्षिण:
(घ) आम्रवृक्ष: (ङ) व्याध:

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (v)
(घ) (i) (ङ) (ii)

4. (क) करोड़ीमलस्य समीपे अनेकानि क्षेत्राणि आसन्।
(ख) धनिकस्य करोड़ीमलस्य भृत्या: सेवका: च स्वेच्छानुसारं कार्यं कुर्वन्ति स्म।
(ग) आश्रमे मन्दबुद्धि: छात्र: वरदराज: आसीत्।
(घ) आत्मसम्मानेन वञ्चित: वरदराज: अचिन्तयत—"नूनम् अहं मूर्ख: अस्मि। मम् भाग्ये विद्या नास्ति।"
(ङ) वरदराज: मार्गे एकं कूपम् अपश्यत् अचिन्तयत च—"यदि मृतिका-घटेन शिलायां गर्त: भवितुमर्हति तर्हि पुन: पुन: अभ्यासेन मम् बुद्धि: अपि कथं तीव्रा न भविष्यति।"

5. (क) एक गाँव में एक धनवान रहता था।
(ख) थोड़े ही समय में करोड़ीमल गरीब हो गया।
(ग) मजदूर खेतों में कूड़ा आदि बाहर निकालते थे।
(घ) भूमि खरीदने के लिए उसके मूल्य को कैसे दोगे।
(ङ) एक बार उसने खेत बेचने का निश्चय कर लिया।

6. (क) विद्या + आलय = विद्यालय
(ख) प्रथम: + अवसर: = प्रथमोऽवसर:
(ग) चतुर्थ + अंश = चतुर्थांश
(घ) स्यात् + एव = स्यादेव

7. स्वयं कीजिए।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (ब) तडागः (ख) (स) विजयः (ग) (ब) द्रोणाचार्यं
(घ) (ब) अष्टादशदिनानि (ङ) (स) अभिमन्युः

2. (क) महिलारोप्यं (ख) कपोताः (ग) तत्राऽगच्छत्
(घ) पितामहः भीष्मः (ङ) सेनापतिः (च) द्रोणाचार्यः

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (v)
(घ) (ii) (ङ) (i)

4. (क) सः (ख) तेन (ग) ते
(घ) सः (ङ) तौ

5. (क) भोजनार्थम् = भोजन + अर्थम् (ख) तत्राऽगच्छत् = तत्र = आगच्छत्
(ग) जालस्योपरि = जालस्य + उपरि (घ) भूत्वाऽतिष्ठत् = भूत्वा + अतिष्ठत्
(ङ) नाऽन्वसरन् = न + अन्वसरन्

6. (क) क्रुद्धः दस्युराजः सेवकान् अवदत्, "रे मूर्खाः! मम देवी अङ्गहीनस्य बलिं न वाञ्छति। अतः एनम् अपि त्यजत।"
(ख) बुद्धिदेवः सर्वदा कथयति स्म—"ईश्वरः यत् करोति तत् शोभनम्।"
(ग) दस्युराजः बुद्धिदेवस्य बलिं अतः न अयच्छत् यतोहि सः पुत्रहीनः आसीत्।
(घ) अब्दुल कलामः 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठनस्य' सदस्यः अभवत्।
(ङ) कलामः 1981 तमे वर्षे पद्मभूषणम् सम्मानं प्राप्तवान्।
(च) कुरान-भगवद्गीता इति पुस्तके प्रति अस्य महती रुचिः अवर्ततः।

7. (क) नृपः स्वप्रजां बहु प्रेम्णा पश्यति स्म।
(ख) एकदा तस्य पुत्रः मृतः आसीत्।
(ग) एकदा नृपस्य अङ्गुली छिन्ना अभवत्।
(घ) नृपेण तयोर्विवादस्य कारणं पृष्टम्।
(ङ) जननी बालकानां जीवनं ददाति।
(च) नृपस्य न्यायं सर्वे जनाः प्रशंसितवन्तः।

8. (क) दक्षिण के जनपद में महिलारोप्य नाम का नगर था।
(ख) उस नगर में बरगद का पेड़ था।
(ग) उसी समय एक शिकारी वहाँ आया।
(घ) वे दोनों आपस में लड़ रही थीं।
(ङ) यह रेवा सन्तानहीन है।
(च) यह विवाद अतिविचित्र है।

❑